कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली

(राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान)

नेफेड कॉम्प्लेक्स, उजवा, नई दिल्ली – 110 073 Ph. 9667971155

E-mail: kvkujwa@yahoo.com, Website: www.kvkdelhi.org

धान में बौनापन (Southern Rice Black-Streaked Dwarf Virus) रोग का प्रकोप एवम रोकथाम के लिए वैज्ञानिक कृषि सलाह

रोग की पहचान: हाल ही में किसानों द्वारा धान की फसल में कहीं-कहीं असामान्य रूप से पौधों के बौनेपन की सूचना प्राप्त हुई है, जिसमेंनिम्नलिखित प्रमुख लक्षण देखे गए:

- खेतों में कुछ स्थानों पर पैच या टुकड़ो में पौधों का अत्यधिक बौना (stunting) रहना।
- पत्तियों का रंग गहरा हरा होना, परंतु कल्लों की वृद्धि कम या पूर्णतय रुकना।
- संक्रमित पौधों की जड़ प्रणाली का अविकसित या अपर्याप्त विकास, जिससे पोषक तत्वों एवं जल अवशोषण में कमी होना।
- कुछ प्रभावित खेतों में सफेद पीठ वाला तेला (white-backed planthopper; Sogatella furcifera) का निम्न स्तर पर आक्रमण, जो इस रोग का संभावित वाहक (vector) है।

संदेहित रोग और वाहक:

रोग का कारण: साउथर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक ड्वार्फ वायरस (SRBSDV) हो सकता हैं जिसकी प्रयोगशाला से पुष्टि होनी बाकि हैं

वर्गीकरण: यह वायरस Reoviridae परिवार का dsRNA वायरस है

संवहन कीट (vector): सफेद पीठ वाला तेला (Sogatella furcifera) इसका संभावित वाहक हैं

संक्रमण विधि: यह कीट रोग को पौधे से पौधे में स्थानांतरित करता है

प्रबंधन हेतु वैज्ञानिक सुझाव:

सांस्कृतिक विधियाँ (Cultural practices):

1. **नर्सरी बुवाई और रोपाई का समय नियंत्रित करें:** अत्याधिक अगेती नर्सरी की बिजाई एवं रोपाई से बचें ।

2. **संक्रमित पौधों का शीघ्र उखाड़ना व् नष्ट करना:** रोगग्रस्त पौधों को पहचान कर उखाड़ें (जैसा की चित्रों में दर्शाया गया हैं) और गहरे गड्ढों में दबाएं या जलाकर नष्ट करें ताकि रोग का प्रसार न हो।

3. **धान की सीधी बुवाई को प्राथमिकता दें:** धान की सीधी बिजाई (DSR) में इस रोग का संक्रमण कम होता है।

4. **खेत की स्वच्छता बनाए रखें:** नालियों और मेढ़ों की नियमित सफाई करें। खरपतवार और अनुवांछित पौधों को हटा कर नष्ट करे क्योंकि इन पौधों पर कीट आश्रय लेते हैं।

5. **जल प्रबंधन:** खेत में अधिक जल-भराव न होने दें, उचित जल निकासी की व्यवस्था रखें जिससे पौधे स्वस्थ रहें और वायरस का असर कम हो।

रोग वाहक कीटों का प्रबंधन (Vector management):

1. **नियमित कीट निगरानी (Monitoring):** खेतों का लगातार निरीक्षण करें। प्रारंभिक अवस्था में रोग वाहक कीटों की पहचान व उनके प्रभावी नियंत्रण से इस रोग को रोकना आसान हैं।

2. **नर्सरी में सफेद पीठ वाला तेला (हॉपर्स) नियंत्रण आवश्यक है:** नर्सरी क्षेत्र में रोग वाहक कीट के प्रभावी नियंत्रण हेतु निम्नलिखित कीटनाशकों का उपयोग करें:

- ❖ डायनोटीफ्यूरान 20% एस जी (ओशीन या टोकन) @ 80 ग्राम/एकड़ या पाइमेट्रोजिन 50% डब्लू जी (चैस) @ 120 ग्राम/एकड़ को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर पुनः एक या दो बार कीटनाशी का छिड़काव करें, विशेषकर यदि हॉपर्स की संख्या अधिक हो।
- ❖ धान की रोपाई के 35-45 दिन बाद इमिडाक्लोरोप्रिड 30.5 प्रतिशत (SC) या थियामेथोक्सम का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ खेतों में सफेद पीठ वाला तेला (हॉपर्स) के नियंत्रण हेतु लाइट ट्रैप का प्रयोग करें जिससे हॉपर प्रकाश की तरफ आकर्षित होकर मर जाते है।

इसके अतिरिक्त कोई भी संशय होने नजदीक **कृषि विज्ञान केन्द्र** एवं **कृषि अधिकारियों** से सम्पर्क करें।

स्त्रोतः धान अनुसंधान केन्द्र, कौल (कैथल),अनुसंधान निदेशालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

वरिष्ठ वैज्ञानिक सह-अध्यक्ष

कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली